Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 01-10-2021, Accepted: 15-10-2021, Published: 30-10-2021
Volume 2, Issue 2, 2021, Page No. 53-54

हरिवंशराय बच्चन की डायरी एवं आत्मकथा में आत्माभिव्यक्ति

मंजू शुक्ला
एसो. प्रोफे. हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
सम्भवतः कला का ध्येय मनुष्य को विनम्र बनाना है। वह ज्ञान के अगम अपार भण्डार से भावना की भित्ति पर ऐसे रंग प्रकट करता ह, जो मानवीय संदर्भों में दुनियॉ के शिष्टाचार को वाणी दे।बच्चन युग परिवेश जनित आन्दोलनोंसे साहित्यकार बनते हैंइसलिए उनका लेखन आत्मगत निजता से दूर नहीं रहता।बच्चन लोक समाज ,जनजीवन से गहरे संबंध स्थापित करते हुए आत्मवादी रचनाकार बने रहे हैं।

मूल शब्दः हरिवंशराय बच्चन, डायरी एवं आत्मकथा

प्रस्तावना

श्री हरिवंशराय बच्चन उत्तर छायावादी व्यक्तिपरक काव्य का बृहत्त्रयी के सर्व प्रमुख कवि है। छायावाद के उत्तर कालीन विघटन की अभिव्यक्ति अपनी सम्पूर्ण विविधताओं में बच्चन की ही रचनाओं में परिपूर्णता के साथ देखी जा सकती है। उनका साहित्य तत्कालीन परिस्थितियों से आक्रान्त निराश,विषण्ण और विदीर्ण युवक – मानस का जीवित चित्र प्रस्तुत करता है। व्यक्ति के अपने सुख– दुख, राग –द्वैष,और अपनी आकांक्षओं का खुला चित्रण बच्चन की कृतियों में तरंगायित हुआ है।

हरिवंशराय बच्चन ने सृजनशील लेखन सन् 1626 से शुरू किया जो किसी न किसी रूप में चलता रहा। बच्चन ने प्रारम्भ से अन्त तक विपुल साहित्य का प्रतिदान हिन्दी संसार को प्रदान किया हैं। उन्होंने गद्य और पद्य की धारा को अपने सृजन से प्रगति दी है। बच्चन जी का समस्त साहित्य आत्मपरक और आत्मबोध की निजी अनुभूतियों से परिव्याप्त है। उनके काव्य विकास को मधुकाव्य, प्रणयकाव्य, राजनीतिक– सामाजिक काव्य की श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। गद्य साहित्य उनकी जीवन की सामाजिक एवं राजनीतिक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है जो उनके व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष कर देती है।

आत्माभिव्याक्ति ही रचनाकार के व्यक्तित्व को उजागर करती है। आत्माभिव्यक्ति शब्द से मानव के आचरण में नीहित '' मैं'' अथवा अहम् का बोध होता है, जिसमें विशिष्ट भावों और और अभिरूचियों का समायोजन बोध वृद्वि के साथ बना रहता है। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने जिस व्यकितत्व का विश्लेषण किया है उसमें प्रर्याप्त समानता है। वास्तव में व्यक्तित्व के अनुरूप ही आत्माभिव्यक्ति का स्वरूप निश्चित रहता है। बच्चन जी के साहित्य में उनका व्यक्तित्व पुर्णरूप से प्रकट होता है।

गद्य कवियों की कसौटी माना जाता हैं। नयी गद्य विधाओं में आत्मकथा और डायरी अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि इनमें लेखक का अपना स्वरूप और प्रव्तियॉ मुखरित होती है। डायरी किसी भी व्यक्ति की निजी सम्पत्ति है ,जो प्रकाशित होने पर सार्वजनिक हो जाती है।और आत्मकथा का तात्पर्य किसी व्यक्ति द्वारा लिखित उसकी जीवनकथा से है।महान व्यक्तियों की आत्मकथायें अनेक दृष्टिा से बहुमूल्य होती हैं। डा0 शशिभूषण का विचार है '' इसमें लेखक अपने जीवन का जितनी तटस्थता से वर्णन करके अनुभवों के विवेचन में जितनी गहराई लाता है,आत्मकथा उतनी ही प्रमाणिक और प्रभावी बन पडती है।[1]

बच्चन जी ने डायरी और आत्मकथा लिखकर हिन्दी साहित्य में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया है। बच्चन जी ने डायरी साहित्य, पत्र लेखन और आत्मकथा के माध्यम से जीवन जगत और साहित्य के बारे में जो टिप्पणियॉ की हैं, उनमें साहित्य के प्रतिमान जीवन का भाव बोध और समाज की मर्यादा निरूपित हुई है। साथ ही उनकी डायरी और आत्मकथाओं में व्यापक जीवनदर्शन, जीवन सौन्दर्य की अभिव्यक्ति सामाजिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा तथा मानवता दृष्टिकोण भी अभिव्यंजित हुआ है। सामाजिक संदर्भो में भी बच्चन ने अच्छे आचरण का प्रतिष्ठा करते हुए सामाजिक चौखटे में वैध संबंधों को नकारने की सलाह दी है। अपने मित्र यादवेन्द्र जी को लिखे पत्र में विवाह और प्रेम संबंधों को समझााते हुए विवाहिता पत्नी का सम्मान बरकरार रखते हुए प्रणय को नया स्थान देने का सुझााव देते हैं।

''विवाह के विरूद्व तुमने हमेशा लिखा है उसका मजाक उडाया है सच्चा विवाह तो दिल का है, रप्रेम का है। वह हो गया तो दिखावे की क्या जरूरत पर मैं देखता हूॅ कि तुम्हारे जैसा सामाजिक क्रान्ति का उपासक भी समाज के सामने झुकने को तैयार है। खैर अगर विवाह करने के लिए दूसरी ओर से आग्रह है तो कर लो.....तुम्हारा कहीं लिखा एक वाक्य याद आता है कि हदय इतना संकुचित नहीं कि उसमें एक ही स्थान पा सके । प्रेम के इस प्रयोग में मेरी पूर्ण सहमति है। मैं तुम्हारे विवाह में सम्मिलित हूॅगा तिथि आदि की सूचना देना।''[2]

साहित्यकार की सोच विशाल ,उदात्त तथा आत्मा के सापेक्ष होती है। उसका जीवन दर्शन समस्त मानवता का जीवन दर्शन होता है।,वह ऐसा जीवन दर्शन प्रस्तुत करना चाहता है जो मर्यादा तथा संवेदना से ओतप्रोत हो। बच्चन ने स्पष्ट निवेदन किया है कि कोई अपनी आत्मा को खो दे तो फिर सारा संसार उसके लिए व्यर्थ है। आत्मा के मूल्य के सामने सारे संसार का मूल्य उसके लिए फीका होता है। बच्चन जी लिखते हैं कि ''प्रेरणा के क्षणों में आत्मा के उपर से पर्दे हटते है। अपनी सच्ची शक्ल देखो अपने को पहचानो.... प्रेरणा का अवसर खोने का अवसर खोने की वस्तु नहीं है। कवि तो उसकी सतत परीक्षा में रहता और जब वह आता है, सारी दुनियॉ की तरफ पीठकर वह अपने को देखता है,अपने को पाता है,अपने को बनाता है।''[3]

साहित्यकार प्रेरणा क्षणों में अपने व्यक्तित्व को ही रचता किन्तु हदय के द्वारा मस्तिष्क से नहीं, यदि दिमाग से रचना करने लगे तो प्रेरक शक्ति समाप्त हो जाती है। बच्चन ने अपने साहित्य में कहीं –कहीं

उस अज्ञात को भी सम्बोधित किया है। लौकिक और अलौकिक के संघर्ष को चितंक बच्चन ने विरोधी न मानते हुए एक दूसरे का पूरक बताया है, कवि विरोध में से ही विकास करता है। इस तथ्य की स्वीकृति बच्चन ने इस प्रकार की है– ''मेरा निर्माण ही कुछ विरोधी कण –समूहों से हुआ था और उनका तनाव झेलते –झेलते मैं उसका अभ्यस्त हो गया हूँ मेरे कवि को अपने विरोधी का सामना कई रूपों में करना पड़ा था।''[4]

बच्चन ने साहित्य सर्जन और जीवन के बीच ऐसा रिश्ता कायम किया है जो भीतर की गहराई तक बसा हुआ है। उन्होंने लिखा है– ''अब मैं सोचता हूँ कि मेरा इस प्रकार का सोचना मेरी उस समय की जरूरत थी..... पर उसका परिणाम मेरे सृजन और जीवन मेरी सृष्टा और भोक्ता दोनों के लिए हितकर हुआ । मैंने जीवन के बहुत से हित को अहितकर दिशाओं और बहुत से अहितकर को हितकर दिशाओं में आते देखा है।''[5]

बच्चन ने आत्मप्रवंचनापूर्ण अनुभवों को अपने साहित्य में स्थान दिया है। अपने जीवन के सहज लम्हों को अनुभूति में तपाकर, गलाकर कविता में ढालकर दीप्तिमान बनाकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया हैं । कवि बच्चन के जीवन में भी संघर्षों का योग है।बच्चन जी लिखते हैं कि ''मैने हमेशा समझा है कि सृजन साहस का काम है। आलोचना कम साहस का काम नहीं ह क्योंकि यहॉ चुनौती साधारण समाज की नहीं अर्थात जागरूक वर्ग को दी जाती है।''[6]

कवि की कथा के विषय नानाप्रकार के होते हैं। उन विषयों को विविधता के साथ प्रस्तुतीकरण के लिए कवि को प्रतीक , बिम्ब , काव्यशक्ति ,काव्यगुण जैसे अनेक उपादानों का सहारा लेना पडता है। बच्चन इन्हीं उपादानों को भावशक्ति के साथ प्रयुक्त करने के कारण उसे प्राण शक्ति की संज्ञा देते हैं।

बच्चन ने अपनी आत्मकथाओं के क्रम में' क्या भूलूँ क्या याद करूँ', ''नीड का निर्माण फिर' , 'बसेरे से दूर' ,और 'प्रवासी की डायरी' में लिखा गया है। बच्चन ने उपर्युक्त बात लेकर पाठकों को यह विश्वास दिलाया है कि वह स्वयं आत्मकथा का विषय हैं और इस विषय में उन्होंने अपनी घरेलु निजी कथा को चित्रित किया है। बच्चन की आत्मकथा के खण्डों का अध्ययन करने के उपरान्त यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कवि ने इस खण्ड में जो भी व्यंजना की है वह सब उसके भीतरी निजीवन से जुडी हुई हैं बच्चन ने अपने सहज विकास का रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए लिखा है–

''मनुष्य का विकास शून्य में नहीं होता पर एक हाथ ऐसा भी है जो सबसे विशिष्ट रूप से मुझे निर्मित करने को प्रेरित, प्रभावित और कभी. कभी बातें करता रहता है। अपने हाथ से अपना हाथ टटोलना मुश्किल है, पर बिना इसको टटोले अपने विकास का इतिहास रखना या तो दम्भी होना है या फिर दयनीय। मेरी लेखनी मुझे इन दोनों स्थितियों से बचाये, क्योकिं न तो यही सत्य है कि सारी परिस्थितियॉ दासी बनकर सब कुछ मेरे अनुकूल करती गई।''[7]

बच्चन का रचनाकार पहली पत्नी की मृत्यु के बाद अधिक संवेदनशील हो उठता है। उसने अन्तिम विदा का गीत लिखते हुए स्वयं ही अपनी कथा व्यथा को पूरी तरह उजागर कर दिया था–

''अन्त का इतना था विश्वास विदा का लिख डाला था गीत
क्लेजे को हाथों से थाम सुना करते थे मन के गीत''[8]

बच्चन ने आत्मकथा तथा अन्य स्फुट लेखों में कविता के संबंध में तरह–तरह की व्यंजनायें की हैं, जिससे विदित होता हैकि साहित्य का धरातल व्यक्ति के अनुभव ही टिका हुआ है। बच्चन आत्मवादी रचनाकार रहे हैं ।उन्होंने काव्य ,गीत, निबन्ध ,कहानी आछि रचनाओं में आत्माभिव्यक्ति अनूभूतियों को प्रस्फुटित किया है।डायरी , आत्मकथा साहित्य तो उनके इस जीवन का भली– भॉति प्रकाशन करता है।

निष्कर्ष

कह सकते है कि डायरी और आत्मकथाओं में प्रेरणा का स्रोत उनके जीवन की अनुभूतियॉ हैं। उन्होंने अपने जीवन में सुख– दुख, चिन्ता, निश चिंतता, प्रसन्नता,अप्रसन्नता, प्रेम– ईर्ष्या,मित्रता, विरोध आदि विभिन्न प्रवृतियों को सहज रूप में भोगा है जो उनके पद्य– गद्य में स्वतः ही अभिव्यंजित हो गई है। सहजता, ईमानदारी, और सत्यपरायणता उनकी डायरी और आत्मपरक रचनाओं की विशेषताएं हैं। मनुष्य के रागात्मक आवेग ,संवेग, मिलन –विरह की अनुभूतियॉ चिरन्तन हैं। इस दृष्टि से कवि बच्चन के डायरी और आत्मकथा साहित्य की महत्ता स्वतः सिद्व है, जिसमें बच्चन की आत्माभिव्यक्ति साकार हो उठी है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्यः विधाएं और दिशाएं,डॉ शशिभूषण सिंहल,पृ0 147
2. बच्चन रचनावली, खण्ड 6, पृ0 319
3. बच्चन रचनावली, खण्ड 8 डायरी, पृ0 386
4. बच्चन रचनावली, खण्ड 7, नीड का निर्माण फिर पृ0 360
5. बच्चन रचनावली, खण्ड 7, नीड का निर्माण फिर, पृ0 286
6. बचचन रचनावली, खण्ड 6, पृ0 375
7. बच्चन रचनावली, खण्ड 7, पृ0 136
8. बच्चन रचनावली, खण्ड 7, पृ0 233